जॉयस मेयर

शांति

अपनी सारी चिन्तायें यीशु पर डाल दो

शांति

शांति

अपनी सारी चिन्तायें यीशु पर डाल दो

जॉयस
मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®

Plot No. 512/B, Road No. 30, Jubilee Hills, Hyderabad - 500 033

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from the King James Version of the Bible.

Scripture quotation marked AMP are taken from The Amplified Bible, Old Testament copyright © 1965, 1987 by Zondervan Corporation. New Testament copyright © 1958, 1987 by the Lockman Foundation. Used by permission.

Scripture quotations marked NKJV are taken from The New King James Version of the Bible. Copyright © 1979, 1980, 1982, 1983, 1984 by Thomas Nelson, Inc. Publishers. Used by permission.

Copyright © 2014 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Plot No. 512/B, Road No. 30,
Jubilee Hills, Hyderabad - 500 033

Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Peace - *Hindi*
Cast All Your Cares upon Him

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय–सूची

भूमिका vii

1 क्या आप शांति का आनन्द ले रहे हैं? 3

2 शांति का आनन्द कसे ले 9

3 शांति की अगुवाई में चले 15

4 आपकी शांति कौन चुराता है? 21

5 शैतान आपकी शांति क्यों चुराना चाहता है? 27

6 परखे जाते समय विश्वासीयों की स्थिति 35

7 एक बार में एक दिन 43

8 प्रार्थना शांति लाती है एक 51

नये जीवन का अनुभव करे 55

भूमिका

"...शांति (एकता; स्थिरता, भय, उत्तेजक भावनाओं और नैतिक संघर्ष की स्थिति में अविचलित) को ढूंढ़े और परमेश्वर, सहकर्मियों एवं स्वयं के साथ शांति की लालसा करने, उसे प्राप्त करने, पीछा करने के यत्न में रहे।" 1 पतरस 3:11

मेरी प्रार्थना है कि "शांति" पर लिखी यह पुस्तक "...परमेश्वर की शांति जो समझ से पर है....." (फिलि. 4:7) का आनन्द प्राप्त करने में आपकी सहायता करेगी।

क्या आप शांति का आनंद ले रहे हैं?

1

क्या आप शांति का आनंद ले रहे हैं?

परमेश्वर के प्रत्येक नया जन्म पर चुके बच्चे को शांति से भरपूर जीवन का आनंद लेना चाहिये। यीशु ने यूहन्ना 14:27 में कहा था,

"मैं तुम्हें अपनी शांति दिये जाता हूं, (मेरी) अपनी शांति मैं अब तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता; तुम्हारा मन न घबराए और न डरे (स्वयं को विचलित और उद्वेलित होने से रोको एवं स्वयं को भयभीत, सशंकित, कायर एवं अस्थिर मत होने दो)"

यह वास्तव में एक सामर्थ शाली वचन है। कृपया इसे बार–बार पढ़े, उसके बाद कम से कम पांच मिनट इस पर मनन करे और इसे आत्मसात हो जाने दें।

सबसे पहिले, हम ध्यान दें कि यीशु के द्वारा दी जाने वाली शांति एक विशेष शांति है, वह संसार से मिलने वाली शांति के

समान नहीं है। संसार हमें किस प्रकार की शांति देता है? संसार हमें शांति का एक अहसास कराता है। यह शांति तब काम करती है जब जीवन आपकी इच्छा के अनुसार चलता है, परन्तु जब जैसा आप चाहते हैं वैसा नहीं होता, तब संसार की शांति बड़ी तेजी से मानों उड़ जाती है। हम "विचलित" हो जाते हैं। यीशु जो शांति हमें प्रदान करते हैं वह अच्छे और बुरे दोनों दिनों में बनी रहती है, जब आप भरपूरी का अनुभव करते हैं या जब आप कमी–घटी महसूस करते हैं। उसकी शांति आंधी–तूफानों के बीच में भी काम करती है।

यदि सब कुछ वैसा ही चलता रहे जैसा हम चाहते हैं तो शारीरिक मन के लिये यह बड़ी अदभुत बात है। परन्तु हम अपने अनुभव से जानते हैं कि वास्तविक जीवन में ऐसा नहीं होता है। एक विश्वासी होने के नाते मैंने वर्षों यह प्रयास किया कि विश्वास का उपयोग करके मैं उस हरेक बात को दूर कर दूं जो मुझे पसंद नहीं थी या जिन्हें मैं अच्छा नहीं समझती थी। इस में मुझे अत्याधिक तनाव और निराशा होती थी कुछ ऐसा करने की कोशिश करना जो हो नहीं सकता और होगा नहीं, सदैव तनाव और निराशा लेकर आता है। परमेश्वर के साथ कुछ अनुभव प्राप्त करने के पश्चात मैंने अन्ततः यह जान लिया कि मुझे अपने विश्वास का उपयोग करके, जीवन के आंधी–तूफानों और परीक्षाओं के बीच होकर स्थिर और शांत मन से गुजरना है। हर बार जब मैं विषम परिस्तियों में फंस जाती हूं मुझे शैतान को रोकना होगा कि वह मुझसे मेरी शांति न चुरा ले।

यीशु ने यूहन्ना 14:27 में कहा, "अपने आप को विचलित और उद्वेलित होने से रोको" जितना अधिक मैं इस वचन को पढ़ती और

चिन्तन करती हूं, उतना अधिक मैं महसूस करती हूं कि बाइबिल मुझ से कह रही है अपने आप के साथ ऐसा मत करो। मुझे इसे रोकना होगा। उसने इस पद में यह भी कहा है "तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।"

यीशु ने विश्वास की कमी के कारण चेलों को फटकारा क्योंकि आंधी–तूफान के बीच उन्होंने अपनी शांति खो दी थी। (मरकुस 4:40) यीशु ने अपनी शांति नहीं खोई। वे नाव के पिछले हिस्से में सो रहे थे। चेले अत्यन्त हड़बड़ाए और घबराए हुए थे। आपका अनुभव क्या है? क्या आप यीशु के साथ नाव के पिछले हिस्से में शांति का आनंद लेते हैं? यदि आपके पास शांति नहीं है – आप जीवन का आनंद नहीं ले रहे हैं।

शांति का आनंद कैसे लें

2

शांति का आनंद कैसे लें

आपके लिये जो बातें आवश्यक हैं उनको "कैसे" प्राप्त करे, इन निर्देशों के बिना, कोई भी संदेश आपकी सहायता नहीं कर सकता। शांति चाहिये यह कहना प्रथम चरण है। परन्तु व्यवहारिक रूप में शांति कैसे प्राप्त करे यह जाने बिना, वास्तविक शांति नहीं पाई जा सकती।

शांति मय जीवन का आनंद लेने के लिये एक बात मेरे लिये अत्याधिक सहायक सिद्ध हुई। मैने जान लिया कि "किसी बात को लेकर कुछ करना जिसमें मैं कुछ नहीं कर सकती" बिल्कुल बेकार और निराश करने वाला है। क्या आप भी ऐसा ही कर रहे हैं? क्या आप भी कुछ बातें घट जाये इसके लिये प्रयास करके, स्वयं को निराश कर रहे हैं? परमेश्वर के पास सब बातों का एक निश्चित समय है। आपको परमेश्वर के सही समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

सामान्य रूप से मौसम गुजर जाने के बाद आप उस मौसम की चीजों को उत्पन्न नहीं कर सकते। यदि आपने बेमौसम किसी बात को उत्पन्न किया तो आपको उससे खुशी नहीं मिलेगी। परमेश्वर की बाट जोहना सीखिये। ऐसा करने से उसे आदर–सम्मान मिलता है और आपको शांति मिलती है।

क्या आप कुछ असंभव करने की कोशिश में है? क्या आप अपने आसपास के लोगों को बदलने का प्रयास कर रहे हैं, शायद उसे जिससे आपका विवाह हुआ है, आपके बच्चों में से कोई एक, मित्र या रिश्तेदार? मनुष्य मनुष्यों को नहीं बदल सकते। केवल परमेश्वर मनुष्य के हृदय के भीतर परिवर्तन लाकर उस पुरुष या स्त्री में बदलने की इच्छा डाल सकते हैं। यदि हम बाहरी तौर पर जबर्दस्ती करेंगे और उनसे बदलने की मांग करेगें, तब हम सबकी शांति भंग हो जायेगी। हमारी संरचना ऐसी नहीं है कि हम नियमों के आधीन रहे। लोग स्वतंत्रता चाहते हैं। वे अपनी इच्छा से काम करने के अवसर चाहते हैं।

विवाह के आरंभिक कुछ वर्षों में मैंने डेव को गोल्फ खेलने से रोकना चाहा। मुझे लगा कि वह गोल्फ खेलने में अधिक समय देते थे और मैं अधिक से अधिक उसके साथ रहना चाहती थी मैने हर प्रयास किया जो मैं कर सकती थी, मैंने हर तरीका आजमाया मैंने उसे समझाया, मैं चिल्लाई, मैंने बहस करके निरुत्तर करना चाहा, मैंने उससे बात करना बंद कर दिया, पर कोई तरीका काम नहीं आया, मैं पूरे समय विचलित रहती थी। कभी–कभी वह मेरी बात मान लेता और कुछ दिनों के लिये खेलना बंद कर देता। परन्तु मजेदार बात थी कि भले ही जो मुझे चाहिये, वह मुझे मिल जाता

था, मेरे मन में शांति नहीं होती थी मेरे मन में शांति इसलिये नहीं थी क्योंकि जो मैं चाहती थी, उसे पाने का मेरा तरीका गलत था। यदि आप किसी पर दबाव बनाकर उसे बदलने का प्रयास कर रहे हैं। तो आपकी शांति भंग हो जायेगी।

क्या आप अपने आप में इसलिये विचलित हैं कि आत्मिकता में आपको जहां होना चाहिये था, आप वहां नहीं है? क्या आप स्वयं को बदलने का प्रयास कर रहे हैं? आपको निश्चित रूप से पवित्रात्मा के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है ताकि वह आपके जीवन में अपने काम को पूरा कर सके। वह आपको परिपक्वता या सिद्ध ता में ला रहा है। आप स्वयं यह काम नहीं कर सकते। यह एक दूसरा क्षेत्र है जिसमें आप वह काम करना चाहते हैं या करने का प्रयास करते हैं जो आप नहीं कर सकते।

मुझे निश्चय है कि जो बातें आपको पसंद नहीं है उन्हें बदलने का प्रयास करना, आपको स्वाभाविक लगता है। थोड़ी देर के लिये वास्तविकता को स्वीकार करें, इन बातों को बदलने में आप कितने सफल रहे हैं? क्या आप स्वयं को निराश कर के अपनी शांति नहीं खो रहे जबकि आपको चाहिये कि परमेश्वर की और उसके सही समय की प्रतीक्षा करते हुये विश्राम करें। अपने जीवन के लिये और आपके जीवन में दूसरे अन्य व्यक्तियों के लिये परमेश्वर पर भरोसा करें?

मैं इन बातों का सार इस प्रकार कहना चाहती हूं कि यदि आप "किसी बात को लेकर कुछ करने का प्रयास कर रहे हैं जिसके बारे में आप कुछ नहीं कर सकते" तो आप निराश हो जायेगें और शांति का आनंद नहीं ले पायेंगे।

शांति की अगुवाई में चलें

3

शांति की अगुवाई में चलें

कुलुस्सियों 3:15 में लिखा है,

और मसीह की शांति (आत्मा में एकता) जिसके लिये तुम एक देह होकर बुलाये भी गये हो, तुम्हारे हृदय में राज्य (लगातार मार्गदर्शन करे और तुम धन्यवादी बने रहो) तुम्हारे मन में उठने वाले सभी प्रश्नों और शंकाओं का अंतिम रूप में निर्णय और समाधान करे।

खेल में अम्पायर का काम है यह बताता कि आप खेल में हैं या "आऊट" हो गये हैं। शांति वह अम्पायर है जो तय करती है कि अमुक–अमुक बात आपके जीवन रहना चाहिये या नहीं।

अनेक व्यक्ति शांति का आनंद नहीं ले पाते क्योंकि वे परमेश्वर की इच्छा से बाहर होते हैं। वे परमेश्वर की इच्छा के बदले अपनी इच्छा के अनुसार चलते हैं। परमेश्वर के वचन को मानने और शांति की अगुवाई में चलने के स्थान पर वे वहीं करते हैं जो उन्हें सही

लगता है या जिसे वे सही समझते हैं। अकसर कुछ बातें हैं जिन्हें मैं करना चाहती हूं। वे अच्छी लगती हैं, अच्छा महसूस कराती हैं और शायद अच्छी भी हों परन्तु मेरी शांति भंग हो जाती है। मैंने सीखा है कि शांति भंग होने पर इन बातों को छोड़ दूं। शांति के अनुसार चले कोई ऐसी चीज़ न खरीदें विशेषकर कोई बड़ी और मंहगी चीज, जिसे लेकर आपके मन में शांति न हो। आप उसे कितना भी क्यों न चाहते हों, यदि आप पवित्रात्मा की अगुवाई के विरुद्ध जायेंगे, अंत में आप पछतायेंगे।

कभी–कभी मुझे प्रचार करने के ऐसे आमंत्रण मिलते हैं जिन्हें मैं स्वीकार करना चाहती हूं परन्तु मेरे मन की शांति भंग हो जाती है। मैं नहीं जानती कि क्यों, परन्तु कभी–कभी शांति वहां नहीं होती। मैंने सीखा है कि मैं चाहे जो समझूं, कोई न कोई कारण सामने आता है जो यह प्रगट करता है कि मुझे शांति की बात मानकर चलना चाहिये।

आरंभिक दिनों में मैंने प्रवास करके प्रचार करना आरंभ किया था उन दिनों के एक कार्यक्रम की मुझे याद है, तब बहुत कम अवसर मिलते थे और दूसरा अवसर काफी समय बाद मिलता था, स्वाभाविक रूप से मैं किसी भी अवसर को खोना नहीं चाहती थी। मुझे टेक्सास के एक चर्च में प्रचार करने का निमंत्रण मिला, उस समय मैं रोमांचित हो उठी और मैंने तुरन्त हां कर दी। लेकिन कुछ सप्ताहों के पश्चात् जब कभी मैं विचार करती वहां जाने की इच्छा बुझ जाती। धीरे–धीरे मेरे भीतर यह इंकार बलवान होता गया और मेरी शांति भंग हो गई, मैं वहां जाने के बारे में मना करने की सोचने लगी, परन्तु तब भी मुझे परमेश्वर की ओर से कोई कारण नहीं मिला था।

मैं प्रतीक्षा करती गयी और करती गयी। अंत में मैं जान गई कि मुझे यह आमंत्रण अस्वीकार करना और उन्हं बताना ही होगा। मैंने उनसे कहा कि मेरे स्थान पर यदि कोई व्यवस्था नहीं होती है तो मैं अवश्य आऊंगी, परन्तु तब भी पता नहीं क्यों, वहां जाने के विषय में मेरे मन में शांति नहीं थी। उन्होंने मुझे जिम्मेवारी से मुक्त कर दिया।

कुछ सप्ताह बाद मुझे पता चला कि हमारी मातृ–कलीसिया उसी सप्ताहांत एक नये भवन का लोकार्पण करने जा रही थी, जिसमें मुझे जाना था। मैं उस कलीसिया में काफी समय तक सह–पास्टर रह चुकी थी, तब मैंने अपनी सेवकाई प्रारंभ नहीं की थी और इस अवसर पर उनके साथ शामिल होना मेरे लिये आवश्यक था।

प्रभु ने मुझे पहिले से नहीं बताया कि क्या होने वाला था? कुछ कारणोंवष उसने नहीं बताना ही उचित समझा। उसके वचन में लिखा है कि शांति के अनुसार चले। अनेक अवसरों पर वह आपको केवल इतना ही बतायेगा कि आप उसकी इच्छा के अनुरुप चल रहे हैं या नहीं। बाद में शायद आप जान पाए कि "क्यों' या फिर कभी न जान पाए।

यदि आप परमेश्वर की अगुवाई को नकार देते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार चलते हैं तो आप कभी भी शांतिमय जीवन का आनंद नहीं ले सकते।

आपकी शांति कौन चुराता है?

4

आपकी शांति कौन चुराता है?

प्रत्येक व्यक्ति कुछ बातों से परेशान रहता है। शैतान आपके जीवन भर आपका अध्ययन करता है। वह आपको शायद आपसे भी बेहतर जानता है, उसे पता है कि आप किस बात से परेशान होते हैं। आपको भी यह जानने की आवश्यकता है कि आप किस बात से परेशान होते हैं। और उन विशेष अवसरों पर आपको सावधान रहना है ताकि आपकी शांति भंग न हो।

सभी के लिये "शांति चुराने वाले" तत्व भिन्न–भिन्न होते हैं। कुछ बातें हैं जो मुझे परेशान करती है परन्तु डेव को नहीं। उदाहरण के लिये, मुझे एकान्त पसंद है परन्तु शोरगुल उसे परेशान नहीं करता, हमारी बेटियों में से एक पंचम सुर में टेप रिकॉर्डर बजाती है और हमारा नौ बर्षीय पुत्र फर्श पर हमारे कुत्ते के साथ कुश्ती लड़ता है, परन्तु डेव आराम से पुस्तक पढ़ सकता है।

मुझे जल्दीबाजी में काम करते नहीं बनता और मैं देर करना सह नहीं सकती। कभी–कभी डेव बहुत कम समय में बहुत अधिक काम करने का प्रयास करते हैं और हम आखिरी मिनट तक जल्दी में रहते हैं। शैतान को पता है कि मुझे यह पसंद नहीं है और वह इस अवसर का उपयोग करके मेरी शांति चुराने का प्रयास करता है। दूसरी ओर जब कभी हमें उड़ान भरनी हो, डेव कम से कम एक घण्टे पहिले एयरपोर्ट पहुंच जाते हैं। जब कभी उन्हें गोल्फ खेलना होता है वे सबसे पहिले गोल्फ कोर्स पर पहुंचना चाहते हैं। यदि शैतान ऐसा कुछ करने में सफल हो जाये जिससे वे विलम्ब से पहुंचे, डेव की शांति भंग होने लगती है।

हम एक–दूसरे से भिन्न हैं। इसलिये शैतान हममें से प्रत्येक के लिये भिन्न–भिन्न चालें चलता है। उससे अधिक चतुर बने। वह तैयारी करता हे कि आपको विचलित कर दे। आपकी शांति चुराने वाले तत्व कोन–कौन से हैं? उनकी एक सूची बनाइये और परिवार में उन पर चर्चा कीजिये। पता कीजिये कि उन्हें किस बात से वास्तव में तकलीफ पहुंचती है, तब एक–दूसरे की सहायता करें कि उन क्षेत्रों में टकराव न हो।

डेव गोल्फ खेलने के प्रति गंभीर हैं। मैं भी खेलती हूं, परन्तु मेरे लिये गोल्फ कोर्स के आसपास हंसने ओर खिलखिलाने तक तो ठीक है। परन्तु मैंने सीखा है, जब मैं डेव के साथ गोल्फ खेलती हूं, मेरा बार–बार वहां मण्डराना और जब वह ठीक से शॉट न मार पाये तब उसे चिढ़ाना ठीक नहीं है। हमें मजा तो तआता है, परन्तु मुझे वह करना चाहिये जिससे उसे राहत महसूस हो। किसी को इस तरह परेशान करने में कोई सार नहीं है कि उसकी शांति

भंग होने लगे। जब आप किसी के साथ लम्बे समय तक रहते हैं, तब आप उसके साथ–साथ अपनी कमजोरियों को भी जानने लगते हैं। मैं फिर से दोहराती हूँ, "एक–दूसरे की सहायता करे और तकलीफ देने वाली बातों को अनदेखा करें।"

डेव मेरी कमजोरियों में मेरी सहायता करते है। जब मैं अध्ययन या विश्राम करने का प्रयास करती हूं, तब वे वातावरण को शांत रखने का प्रयास करते है। वे मुझे विश्राम करने और मन बहलाने के लिये प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि यदि मैं बहुत थक गई तो शैतान मेरी शांति चुराने लगेगा। गलतियों 6:2 में लिखा है, "एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे का बोझ उठाओ..." हमें एक–दूसरे की निर्बलताओं को सहना है, यह जानकर कि हम सबमें अनेक निर्बलताएं हैं और हमें एक–दूसरे के लिये प्रार्थना करना चाहिये।

शैतान आपकी शांति को क्यों चुराना चाहता है?

5

शैतान आपकी शांति को क्यों चुराना चाहता है?

हम जानते हैं कि शांति हमें पवित्रात्मा के साथ एकता के सूत्र में बांधती है। दूसरे शब्दों में कहे तो पवित्रात्मा केवल शांति के वातावरण में काम करता है। शांति में सामर्थ है। मैं विश्वास करती हूँ कि इसीलिए यूहन्ना 14:27 में लिखा है कि मसीह में शांति हमारी विरासत है। यीशु ने कहा, "मैं अपनी (मेरी) शांति तुम्हें देता हूँ..." दूसरे शब्दों में उसने वसीयत में हमें शांति लिख दी है।

यदि आपकी कोई समस्या है और शैतान आपको विचलित नहीं कर पाता है, तो उसका आपके ऊपर कोई जोर नहीं है। परमेश्वर पर भरोसा करने वाला दृष्टिकोण लेकर निश्चिन्त और शांत रहने में आपका बल है। आपको विचलित और भयभीत करने के पश्चात् शैतान का आपके उपर जोर चल जाता है।

जब आप किसी तकलीफदेह स्थिति में फँस जाये, तब आपका लक्ष्य हो कि आप बिल्कुल शांत रहेंगे। विचलित होकर या धीरज खोकर शैतान के हाथ का खिलौना न बनें आपको भावनात्मक रूप से विचलित करने में उसे आनन्द आता है अकसर ऐसा होता है कि किसी भावनात्मक स्थिति में फँसने के पश्चात् व्यक्ति बेकाबू होकर उन बातों को कहने लगता है जिन्हें लेकर शैतान आग में घी का डालने का काम करता है।

याकूब 3:5,6 (भावार्थ) के अनुसार जीभ एक छोटा अंग है परन्तु यह भंयकर आग लगा सकता है। यह दुष्टता का संसार है जो हमारे अंगों में प्रदूषण और अनैतिकता लाता है, और यह नरक की आग से जलती है। आप पवित्रशास्त्र के इस पद में देख सकते हैं कि शैतान चाहता है आपका जीभ पर से नियंत्रण हट जाये ताकि उसे नियंत्रण मिल सके। याद रखिये, शैतान इस ताक में तैयार रहता है कि आपको विचलित कर दे।

आपने ध्यान दिया होगा कि जब आप चर्च या बाइबिल अध्ययन में जाने की तैयारी करते हैं तब शैतान अधिक सक्रियता से काम करता है। वर्षों तक हमारे घर रविवार की सुबह में कुछ न कुछ उलझाने वाली बात हो जाती थी और शायद ही हम किसी को विचलित किये बिना कभी चर्च गये हो, अकसर हम सब विचलित हो जाते थे।

रविवार की सुबह कुछ न कुछ गुम जाता, या टूट जाता, या बिखर जाता था जबकि सप्ताह के दूसरे दिनों में ऐसा नहीं होता था। हमारे बच्चे सप्ताह के दूसरे दिनों में ठीक रहते परन्तु रविवार के दिन आपस में झगड़ने लगते। जितना अधिक शोरगुल और

अफरा–तफरी मचती मैं उतना अधिक विचलित हो जाती (मुझे अधिक शोरगुल पसंद नहीं है)।

अंत में मैं शिकायते करने लगती, डेव को यह बिल्कुल पसंद नहीं आता, इसलिये थोड़ी देर के बाद वह कहता कुड़कुड़ाना बन्द करो। तब मैं उस पर विफर पड़ती। तब बच्चे रोने लगते क्योंकि मैं और डेव आपस में बहस करने लगते।

इन बातों के बीच हमारा कुत्ता किसी के जूते मुँह में दबाकर कमरे में दौड़ लगाने लगता, तब मैं चीखने लगती, "जल्दी करो! हम लेट हो रहे हैं!" आप समझ सकते है कि कैसी स्थिति होती होगी।

जब मैंने याकूब 3:18 पढ़ा, तब मैंने जान लिया कि यह सब उसी समय क्यों होता है जब हम परमेश्वर का वचन सुनने जा रहे हो पवित्रशास्त्र में लिखा है, "और मिलाप कराने वालों के लिये धार्मिकता (सही काम) का फल (फल का बीज) मेल मिलाप (शांति) के साथ बोया जाता है।"

दूसरे शब्दों में परमेश्वर के वचन को हमारे जीवन में बोये जाने, जड़ पकड़ने और फलवन्त होने के लिये यह आवश्यक है कि वह शांति के वातावरण में मेल मिलाप वाले के द्वारा बोया जाये। सुनने वालों को भी परमेश्वर का वचन शांतिमय दृष्टिकोण के साथ सुनना चाहिये।

आप अपने स्वयं के जीवन के बारे में सोचिये। कितनी बार जब आप वचन सुनने जाते है उसके पहिले शैतान आपको विचलित करने में सफल रहा है? उसकी युक्तियों पर ध्यान देना न भूले,

और उसके हाथ का खिलौना न बनें। 2 कुरिन्थियों 2:11 में लिखा है, "हम शैतान की युक्तियों से अनजान नहीं है" किंग जेम्स संस्करण में उसे "चाले" कहा गया है। शैतान अपनी चालों के द्वारा हमें धोखा देकर पथ–भ्रष्ट करना चाहता है। हमें शैतान से भी अधिक चतुर बनना है।

1 पतरस 5:8 में लिखा है, "सचेत (संतुलित और सधीर) और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजने वाले (भूख से व्याकुल) सिंह की नाई इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाये।"

आप शिकार न बने! मैं आपको सचेत करने चेतावनी देती हूँ जब कभी आप निराश और विचलित अनुभव करने लगे, हर बार अपने आपको रोके और इन प्रश्नों को पूछे, "शैतान क्या करने का प्रयास कर रहा है? यदि मैं इन नकरात्मक भावों को प्रश्रय देता हूँ इनका परिणाम क्या होगा?"

इफिसियों 4:26, 27 एक महत्वपूर्ण वचन है जो शिक्षा देता है कि शैतान के प्रयासों से विचलित न होकर उसे हमारे जीवन में पाँव रखने की जगह न दें। पद 26 में लिखा है, क्रोध तो करो पर पाप मत करो, तुम्हारा क्रोध (आवेश, तनाव, हिंसा या घृणा) सूर्य अस्त होने तेक बना न रहे। दूसरे शब्दों में "विचलित मत रहो।"

पद 27 में लिखा है, और शैतान को (ऐसा) कोई अवसर मत दो। जब आप विचलित होते है तब आप अपना आनन्द खो बैठते है, जब आप अपना आनन्द खोते है तब आप आपकी सामर्थ खो देते हैं नहेम्याह 8:10 में लिखा है, "परमेश्वर का आनन्द तुम्हारा बल है" भजनकार दाऊद ने भजन 42:5 में लिखा है, हे मेरे

प्राण; तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? यशायाह 30:15 में लिखा है, "शांत रहने और भरोसा करने में तुम्हारी वीरता है..." फिर एक बार हम देखते हैं कि शैतान हमें अधीर और विचलित करके हमारी सामर्थ (आत्मबल) को चुराना चाहता है।

मैंने पवित्रात्मा से सीखा है कि वह शांति के वातावरण में काम करता है। पवित्रात्मा गड़बड़ी में काम नहीं करता, शैतान करता है। परन्तु पवित्रात्मा शांति में काम करता है। अपने घर, व्यापार या उद्योग, कलीसिया या सेवकाई में शांतिमय वातावरण बनाये। ऐसा करते हुये आप परमेश्वर के वचन और आत्मा का सम्मान करेंगे। आप अवश्य आज्ञापालन का फल पायेंगे।

स्मरण करे, यीशु ने सत्तर चेलों को दो–दो करके, भेजा था जिन्होंने अनेक सामर्थ के काम संपन्न किये, जैसे, दुष्टात्माओं को निकालना, बीमारों को चंगा करना और सुसमाचार का प्रचार करना। प्रभु ने उनसे कहा था कि जब वे किसी नगर में जाये, ठहरने के लिये एक घर तय करे और उनके लिये शांति और कल्याण कहे, और वही रहे। यदि कोई उन्हें (शांति पूर्वक) ग्रहण न करें, तो वे अपने पाँवों की धूल झाड़ दे और वहाँ से चल दे। (लूका 10:1–11,17) क्यों? उनके काम सामर्थ विहीन होंगे यदि वे शांति के वातावरण में नहीं रहते।

मुझे निश्चय है कि इस पुस्तक के संदेश के द्वारा आपको एक नया प्रकाशन मिल रहा है। आपसे जितना हो सकता है, भरसक आत्म नियंत्रण करके सदैव शांति में बने रहने का प्रयास करे।

लूका 22:46 के अनुसार, यीशु ने हमें सिखाया है कि हम प्रार्थना करें ताकि परीक्षा में न पड़े। उसने चेलों से कहा, "...उठो और प्रार्थना करो जिससे तुम (कभी भी) परीक्षा में न पड़ो" इस क्षेत्र में शैतान को परास्त करने के लिये अपने आप पर और अपने बल पर भरोसा न करे। प्रतिदिन यह प्रार्थना करे कि शैतान का प्रतिरोध करने के लिये परमेश्वर आपको अनुग्रह दे। जब कभी शैतान आपकी शांति चुराने का प्रयास करें, परमेश्वर से बल और सहायता माँगे।

स्मरण रखिये, यूहन्ना 15:5 में लिखा है, "...मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते", अपने आप इसे करने का प्रयास न करे! परमेश्वर से सहायता माँगिये। आप मसीह में सब कुछ कर सकते हैं (फिलिप्पियों 4:13) परन्तु अपने आप कुछ भी नहीं। यूहन्ना 5:30 में यीशु ने यहाँ तक कह दिया कि वह अपने से कुछ नहीं कर सकता। आपका दृष्टिकोण विनम्र होना चाहिये यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको सहायता करे। 1 पतरस 5:5 में लिखा है, ...परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।

संक्षेप में मैं यह कहना चाहती हूँ कि शैतान आपकी शांति को चुराना चाहता है ताकि आपका बल चुरा सके। वह आपको निर्बल और अशक्त करना चाहता है, परन्तु मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि "...प्रभु में और उसके सामर्थ के प्रभाव में बलवान बनो" (इफिसियों 6:10)। उसकी शांति में बने रहे!

परखे जाते समय विश्वासियों की स्थिति

6

परखे जाते समय विश्वासियों की स्थिति

इफिसियो 6:13 में लिखा है, "... सब कुछ (जो परीक्षा के दिनों में आवश्यक है) पूरा करके स्थिर (अपने स्थान में) रह सको" आपका स्थान कहाँ हैं ? इफिसियों 2:6 में सिखाया गया है कि हमारा स्थान "मसीह" में है। स्थिर रह सको या खड़े रह सको यह यूनानी भाषा के शब्द histemi[1] का अनुवाद है। इसका एक अर्थ "बने रहना" (abide) भी है। यूनानी भाषा में "बने रहने" के लिये यूहन्ना 15:7 में meno शब्द आया है। meno (बने रहना) का एक अर्थ "खड़े रहना"[2] है। meno (बने रहना) का कही–कही stand[3]

1. जेम्स स्ट्रांग – "ग्रीक डिक्शनरी ऑफ द न्यू टेस्टामेंट" स्ट्रांग्स एक्सहेन्सटिव कॉनकॉरडेन्स ऑफ द बाइबिल (एबिन्गडन, नैशबिले 1890) पृष्ठ38, इंद्राज # 2476,
2. स्ट्रांग कॉनकॉरडेन्स "ग्रीक" पृष्ठ 47 # 3306
3. डबल्यू. इ.वाइन, एन एक्सपोसिटरी डिक्शनरी ऑफ न्यू टेस्टामेंट वर्डस (ओल्ड टप्पन : फ्लेमिंग एच. रेवेल 1940), खण्ड IV, पृष्ठ 70,71

खड़े रहने के अर्थ में उपयोग किया गया है। यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहे तो जो चाहो माँगों और वह तुम्हारे लिये हो जायेगा। (यूहन्ना 15:7)। बने रहने का स्थान सामर्थ का स्थान है।

इब्रानियों 4 में लिखा है कि जब आप परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने के लिये संघर्ष और प्रयत्न बन्द करके विश्वास और आज्ञापालन करते हैं आप उसके विश्राम में प्रवेश करते हैं। परखे जाने या परीक्षा के दिनों में प्रभु जो अगुवाई करे, उस काम को करे और तब परमेश्वर में अपना स्थान ले ले या "मसीह में बने रहे, और देखे कि वह आपके बदले में काम करता है। बाइबिल में लिखा है "चुपचाप रहो और प्रभु के उद्धार के काम को देखो" (निर्गमन 14:13) ये सभी शब्द "बने रहो," "चुपचाप रहो" खड़े रहो और "मसीह में" एक ही मूल बात कहते है, अपनी शांति भंग मत होने दो।

फिलिप्पियों 1:28 पवित्रशास्त्र के सबसे सामर्थशाली वचनों में से एक है जिसमें इस विषय पर विस्तृत और सुस्पष्ट रूप से कहा गया है। यहाँ लिखा है,

"किसी बात में (एक पल भी) विरोधियों से भय नहीं खाते? यह (स्थिरता और निर्भीकता) उनके लिये विनाश का स्पष्ट (प्रमाण और मुहर) चिन्ह है परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार एवं छुटकारे का, और यह (स्पष्ट प्रमाण एवं चिन्ह) परमेश्वर की ओर से है।"

इस वचन में बिल्कुल स्पष्ट है कि जब आप पर आक्रमण हो आप शांति बनाकर रखे। यह शैतान को दर्शाता है कि वह हार

चुका है। जब आप विचलित नहीं होते, वह नहीं जानता कि क्या करे। अविचलित रहना आपको परमेश्वर के छुटकारे के लिये आश्वस्त करता है क्योंकि आपका शांति और विश्राम का यह दृष्टिकोण परमेश्वर पर प्रगट करता है कि आप वास्तविक विश्वास में होकर कार्य कर रहे हैं। इब्रानियों 4 में लिखा है कि जो परमेश्वर की शांति/विश्राम में प्रवेश करते है, उन्होंने विश्वास किया है।

जबकि परमेश्वर आपकी कठिनाईयों का सामना करता है आप जीवन में आगे बढ़ सकते हैं और जीवन का आनन्द ले सकते हैं। मेरा विश्वास है कि बहुत से लोग इस अस्पष्ट विचारधारा को मानते हैं कि जब जीवन में कठिनाईयाँ या संकट हो, तब जीवन का आनन्द उठाना गलत है। यदि आप और कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम बेचारे बने रहो।

मैं जानती हूँ कि पिछले वर्षों में अनेक अवसरों पर मैंने इसी प्रकार के विचार रखे थे। जब डेव और मुझे किसी प्रकार की परेशानी से होकर गुजरना पड़ता वह खुश रहता और मजे करता। परन्तु मैं बेचारी बन जाती और उस पर नाराज़ होती क्योंकि मेरे साथ बेचारगी का प्रदर्शन नहीं करता।

अकसर हमारी परेशानियाँ आर्थिक होती है। लगता है कि डेव इस क्षेत्र में अलौकिक विश्वास रखते है। वह मुझसे कहते, "हम दशवांश देते और जब जरूरत देखते है उदारता से दान देते हैं।" बाइबिल में लिखा है. "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।" (1 पतरस 5:7) बाइबिल में यह भी लिखा है, "और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर घटी को पूरी

करेगा।" (फिलि. 4:19) तो मैं क्यों चिन्ता करूं? चिन्ता करने से रूपये नहीं आयेंगे, और न कभी आते हैं।

डेव इस प्रकार अडिग बना रहता था। जब परमेश्वर समस्याओं का सामाना करते थे, डेव आगे बढ़कर जीवन का आनन्द लेते थे। मैं कहती, "मुझे यह सब पता है, पर तुम ऐसे निष्क्रय नहीं रह सकते", मैं चाहती थी कि वह कुछ करे। वह कहता, "ठीक है जॉयस तुम क्या चाहती हो, मैं क्या करूं ?" मैं कहती, "प्रार्थना करो, तुमको प्रार्थना करनी चाहिये," वह कहता, "मैं करता हूँ, मैंने प्रार्थना की है और कहा है कि, हे परमेश्वर तू इस समस्या का निदान कर, मैंने यह भी कहा है कि परमेश्वर मुझे बताये यदि मैं और कुछ भी कर सकता हूँ। उसने अब तक कुछ और करने के लिए नहीं कहा। इसलिये मैं कुछ नहीं करता और मुझे इस बेचारेपन का कोई अर्थ समझ नहीं आता।"

मैं अपने दिल की गहिराईयों में जानती थी कि डेव सही था फिर भी कुछ अस्पष्ट सी भावना मेरे भीतर मुझे रोकती और यह समझाती थी कि समस्याओं के बीच मुझे आनन्द नहीं करना है। अनेक वर्षों तक इन बातों का परिणाम एक जैसा था – हर बार समस्याएँ आने पर डेव प्रार्थना करते और अविचलित रहते, जबकि मैं प्रार्थना करती और चिन्ता करती। मैं अपने आपको बेचारी बना लेती। डेव अपने जीवन का आनन्द लेता और परमेश्वर अंत में सदैव हस्तक्षेप करते और हम समस्या से उबर जाते।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अंततः मैंने जान लिया कि, मैं स्वतः कुछ नहीं करती थी मैं केवल अपने आप को बेचारे पन का अहसास देती और शायद परमेश्वर की ओर से आने वाले उत्तर में

और विलम्ब का कारण बन जाती। परन्तु अब मैं तूफानों के बीच शांति का आनन्द लेती हूँ। (मरकुस 4:37–40)

यीशु ने कहा "...संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढ़ाढ़स बांधों, मैंने संसार को जीत लिया है" (यूहन्ना 16:33ब) बाइबिल यह भी कहती है कि परीक्षाओं का आना अवश्य है, परन्तु हमें प्रोत्साहन दिया गया है कि हम परीक्षा में गिरे नहीं परन्तु खरे निकले। (लूका 8:13; 1 कुरि. 10:13; याकूब 1:12) मेरा विचार यह है कि चुनौतियाँ, बाधाएँ, जीवन में सदैव आती रहेगी परन्तु हम मसीह के माध्यम से जय पाने वालों में है। (रोमियों 8:37)

हम "जय पा नहीं चुके" परन्तु हम सदैव "जय पाते है" आप जीवन में कभी उस स्थान में नहीं पहुँचेगे, जहाँ आप सब समस्याओं, रूकावटों पर जय पा चुकेगे, परन्तु आपके पास मसीह में सदैव जय पाने का निश्चय है। आप सदैव जय पा रहे है!

जब आप उस स्थान में आयेंगे, जिसके विषय में पौलुस ने फिलिप्पियों 4:11–12 में लिखा है कि मैंने सीखा है कि जिस दशा में मैं हूँ उसी पर संतोष (शांतिमय रहूँ) करूं, चाहे मैं बढ़ती में रहूँ या घटती में। यदि आप संतोष करना और शांति बनाये रखना नहीं सीखेंगे तो आपके जीवन में एक के बाद एक उतार–चढ़ाव और विचलन आते रहेंगे। स्मरण रखें कि, यदि शैतान परिस्थितियों के द्वारा आप पर नियंत्रण कर पाता, वह हमेशा आपको अँगूठे के नीचे दबाकर रखता। आप अपनी शांति में स्थिर रहकर सदैव अपने अधिकार में बने रह सकते हैं।

एक बार में एक दिन

7

एक बार में एक दिन

अपनी शांति को भंग करने का एक निश्चित तरीका है कि, आप कल के बारे में चिन्ता करना आरम्भ कर दे।

मत्ती 6:34 में लिखा है, "सो कल के लिये चिन्ता न करो क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा, आज के लिये आज ही का दुख बहुत है।"

हम में से अधिकांश के पास कल की चिन्ता छोड़ कर आज के लिये ही बहुत सी बातें हैं जिन्हें पूरा करना है। परमेश्वर हमें आज के लिये अनुग्रह देगा परन्तु कल के लिये अनुग्रह तब तक नहीं देगा जब तक कल ना आ जाये।

लोग अकसर चिन्ता करते और सोच–सोचकर चिन्तित रहते हैं जबकि वे बातें कभी घटती नहीं। "क्या होगा यदि" दुखदायी है। जब आप "क्या होगा यदि" सुनते है या ऐसे विचार आपके मन में

आते हैं आप सावधान हो जाये। क्योकि संभव है बहुत जल्दी आप चिन्ताओं में घेर लिये जाये। कुछ लोग इतनी अधिक चिन्ता करते है कि उनकी चिन्ताएं, आशंकाएं या डर बन जाती है। अकसर लोग जिस बात से डरते है उनके साथ वही बात हो जाती है। हम विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर से प्राप्त कर सकते हैं और डरने कें द्वारा शैतान से भी प्राप्त कर सकते है।

कल के विषय में अपने मन में कभी डर न पाले। केवल इतना जानकर चले कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है। कल के हाथ में कुछ भी हो, कल परमेश्वर के हाथ में है। उसका अनुग्रह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पर्याप्त है। कल के लिये चिन्ता करते हुये, आज का आनन्द मत बर्वाद करो। हम एक बार में एक दिन जिये और आप पायेंगे कि मसीह में बने रहकर अद्‌भुत कामों को संपन्न कर सकते है।

जब मैंने बाइबिल कॉलेज में पढ़ाना प्रारम्भ किया, तब मैंने यह सबक सीखा। मैं अपनी मातृ–कलीसिया में जहाँ मैं सह–पास्टर थी, सप्ताह में एक दिन पढ़ाती थी। मेरे पास चार बच्चे थे और एक पूर्ण कालिक काम, पहिले से था तब मुझे बाइबिल कॉलेज में पढ़ाने का अवसर मिला, जहाँ मुझे सप्ताह में तीन दिन पढ़ाना था। मुझे वास्तव में वचन सिखाने की इच्छा थी और यह अवसर मिला कि सप्ताह में तीन दिन पढ़ाना था।

जब मैं पढ़ाती थी, मुझे स्वयं पढ़ना और तैयारी करना पड़ता था। इन कक्षाओं में अधिकांश बाइबिल का गहिरा अध्ययन करने के लिये थी, जिसका अर्थ यह था कि, मैं पहिले स्वयं वचन में गहिरे उतरू और तैयारी करूं, विशेषकर पहिले वर्ष में यह जरूरी था।

सभी कक्षाएं शाम को लगती क्योंकि दिन में मैं काम पर जाती। मैं नहीं जानती थी कि मैं कैसे कर पाऊंगी, परन्तु मुझे लगता कि परमेश्वर चाहते थे कि मैं पढ़ाऊं।

काफी प्रार्थना और विचार करके मैंने परमेश्वर में उस काम के लिये कदम बढ़ा दिया जो असंभव लगता था सबसे मुख्य बात जो प्रभु लगातार मेरे मन पर अंकित कर रहे थे, "एक बार में एक दिन और तुम यह काम कर लोगी? यदि मैं कल के विषय में सोचने लगूं मैं बहुत जल्दी मुसीबत में फँस जाऊँगी क्योंकि तब मुझे असंभव बातों का ध्यान आयेगा। परन्तु प्रतिदिन, "एक बार में एक दिन" करके काम संभव हो गया। परमेश्वर ने मुझे अनुग्रह दिया, हर दिन जब मुझे जरूरत थी, उस दिन से पहिले नहीं। दूसरा वर्ष अत्यन्त आसानी से बीता, क्योंकि मेरे पास पूरा पाठ्यक्रम तैयार था। इस कारण प्रथम वर्ष के समान दूसरे वर्ष में अधिक पढ़ना नहीं पड़ा।

परमेश्वर ने मुझे दो कारणों से इस काम को करने के लिये प्रेरित किया, छात्रों को वचन की शिक्षा देने के अतिरिक्त यह अनुभव प्राप्त करना था कि यदि एक बार में एक दिन का जीवन जीयें तो जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह से कितना कुछ किया जा सकता था। दूसरा कारण यह था कि मैं इस बात को पढ़ाने के लिये अनुभव प्राप्त करूं। अब मैं अकसर पढ़ाती हूँ, मैं और डेव "लाईफ इन द वर्ड" की सभाएं हमारे गृहनगर में करने के साथ–साथ सफर करते और पढ़ाते भी है। परमेश्वर भला है। और उसके मार्ग सिद्ध है।

इसी से जुड़ा एक और क्षेत्र है जिसमें लोग बहुत दुख उठाते

है वह है पछतावा – अतीत के कामों पर पछताते हुये जीवन व्यतीत करना। हम सब गलतियाँ करते है! जी हाँ, मैंने कहा, "हम सब गलतियाँ करते है!" यहां तक कि वे लोग भी गलतियाँ करते हैं जिनके विषय में आप सोचते हैं कि वे कोई गलती नहीं करते बाइबिल कहती है कि हममें से प्रत्येक के पास गलतियों का अपना एक बोझ है (गलतियों 6:5) हम सब वे बातें कहते और करते हैं जिन्हें कहना और करना नहीं चाहते परन्तु एक बार जो काम कर लिया, सो कर लिया।

मैंने यह सीखा है कि किसी काम के लिये जो मुझसे हो चुका और अब मैं कुछ नहीं कर सकती अपनी शांति भंग करने की अपेक्षा मुझे परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिये कि वे सब कुछ ठीक कर देगे। उसके पास यह सामर्थ है, आप जानते हैं। वे हमारी गलतियों के परिणाम को ठीक कर सकते है।

कभी–कभी मैं ऐसा कुछ कह देती हूँ जो चाहती हूँ कि काश मैंने नहीं कहा होता। उससे किसी को चोट पहुँची है या किसी का क्रोध उबल पड़ा है, यह सोचकर चिन्ता करने के बदले मैं परमेश्वर से कहती हूँ, हे प्रभु, उन्हें पता चले कि मेरा मन उनके प्रति सही था, भले ही मैंने गलत बात कह दी है। मैं प्रभु पर भरोसा करती हूँ कि वह उनके हृदय में काम करेगा और मुझे अनुग्रह देगा। ऐसा करने से मुझे कई दिन तक मलाल करते बिताना नहीं पड़ता और उनको देखने पर चापलूसी का व्यवहार नहीं करना पड़ता।

हम बहुत सी बातों के लिये पछताते है। डेव और मैं व्यस्त रहते है इसलिये अकसर घर से बाहर भोजन करते है। कभी–कभी हम वहाँ खाना खाते हैं जहाँ खाना अच्छा नहीं होता या सेवाएं

अच्छी नहीं होती। हम वहाँ से उठ जाते है और घंटो वहाँ जाने का अफसोस करते हैं। प्रभु ने हमें दर्शाया कि गलत होटल या रेस्तरां का चुनाव करने से भी हमारी शांति भंग होती है।

स्मरण रखे, आपको शांति का आनन्द लेना है, किसी बात को लेकर जिसमें अब आप कुछ कर नहीं सकते, कुछ सुधारने की कोशिश न करे। एक बार आपने किसी स्थान को चुना और बिल चुका दिया उसके बाद पछतावा करने से कुछ नहीं बदलेगा।

अब हम अपनी परिस्थितियों में अनुभव का लाभ लेकर भंला कर सकते है। हम कह सकते है "वे सब लोग जो वहाँ जाने वाले है असंतुष्ट होगे, क्या हम बच नहीं गये। हमने पहिले ही जान लिया था कि वह स्थान जाने योग्य नहीं है। हम फिर वहाँ जाकर समय और पैसा कभी बर्बाद नहीं करेंगे।"

मेरी दीवार पर यह लिखा हुआ टंगा है – यदि आप भूतकाल में जीते है, जीवन कठिन होगा। यीशु ने यह नहीं कहा – मैं था' यदि आप भविष्य में जीते है, जीवन कठिन होगा। यीशु ने यह नहीं कहा "मैं होऊंगा" परन्तु यदि आप एक बार में एक दिन जीते है, जीवन में सब कुछ सही होगा क्योंकि यीशु ने कहा "मैं हूँ" (यूहन्ना 8:58) वह सदा आपके साथ है आपकी प्रत्येक परिस्थिति में जो वर्तमान है, केवल आज के दिन के लिये पर्याप्त अनुग्रह पाने लिये उस पर भरोसा करें।

प्रार्थना शांति लाती है

8

प्रार्थना शांति लाती है

फिलिप्पियों 4:6,7 में लिखा है –

"किसी बात की चिन्ता मत करो (व्यग्र, अधीर मत हो) परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थिति किये जाये।

"तब परमेश्वर की शांति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेंगी।"

उस शांति का अनुभव करना जो समझ से बिल्कुल परे है एक बड़ी बात है। जबकि आपकी परिस्थितियाँ खराब है, आपको विचलित, उद्वेलित, परेशान और चिन्तित होना चाहिये, परन्तु आप के भीतर शांति है उसे समझाया नहीं जा सकता, यह अद्‌भुत अनुभव है। संसार इस शांति के लिये तरस रहा है, आप इस शांति को खरीद नहीं सकते, यह बेची नहीं जाती, यह यीशु की

ओर से निःशुल्क है। जब आप यीशु मसीह को अपना निज प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानकर ग्रहण करते है और उसके सिद्धान्तों पर चलते है, तब यह शांति आपकी है।

समर्पण की प्रार्थना बड़ी सामर्थशाली है वह आपका बोझ लेकर यीशु के उपर डाल देती है, 1 पतरस 5:7 में लिखा है – "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। बाइबिल का एम्पलीफाइड संस्करण 1 पतरस 5:7 को इस रूप में लिखता है" –

अपनी सारी चिन्ताएं, सारी व्यग्रता, परेशानियाँ और आकांक्षाएं एक बार में सदा के लिये उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा प्रेमसिक्त एवं चौकस ध्यान रहता है।

कैसा सौभाग्य है! अधिकांश मसीही इस महान सौभाग्य का लाभ नहीं उठाते यद्यपि यह उनके लिये है।

क्या आप अपनी समस्त चिन्ताएं उस पर डाल कर उसकी शांति का आनन्द उठाते हैं? शब्द "डाल देने" का अर्थ है, शीर्घता से "फेंकना या छोड़ देना' जितने जल्दी आप अपनी चिन्ताएं उस पर डाल दे उतना ही बेहतर है। आप प्रार्थना के द्वारा इस कामको कर सकते है। आप अपनी समस्याओं को उसकी प्रेमसिक्त देखभाल में छोड़ दीजिये, जैसे ही पवित्रात्मा आपको बताये कि आप किसी बात की चिंता कर रहे हैं, या शांति खो रहे है, उतनी शीघ्रता से आप इस काम को करे।

शैतान चाहता है कि आप चिन्ता करे। 1 पतरस 5:9 में लिखा है "शैतान का आक्रमण होते ही उसका सामना करो" इसका अर्थ

है आक्रमण के आरम्भ में ही उसका प्रतिरोध करो। यदि आप रूके रहेंगे वह आपको घेर लेगा। आप प्रतिरोध करने में जितना विलम्ब करेंगे, उतना ही शैतान की पकड़ दृढ़ होती जायेगी तब स्वतंत्र होना और भी कठिन होगा। जैसे ही आपको महसूस हो कि आप चिन्ता करने लगे है, चिन्ता करना बन्द कर दीजिये। स्थिति के अनुसार जो भी चिन्ताएं है, परमेश्वर पर डाल दीजिये। अपनी सोच का तरीका बदल दीजिये।

जब पहिले पहल मैं "चिन्ताओं का उस पर डालने" और "चिन्ता न करने" का सिद्धान्त सीख रही थी। मैंने जाना कि मेरी सोच गलत थी। मैं दिन भर कल्पनाओं को दूर भगाती और वे फिर से आ जाती थी मुझे स्मरण है कि मैं उन सब बातों को सोचकर कितनी निराश हो जाती थी। मैंने प्रभु से कहा, "यह कैसे हो सकता है कि कोई मनुष्य किसी बात को न सोचे?" देखिये, चिन्ता नहीं करने का अर्थ है उस समस्या पर सोच विचार न करे। परन्तु जब आपको सोचना और निर्णय लेना है तब आपको नकारात्मक नहीं परन्तु सकारात्मक रूप से सोचना होगा। आप बिना नकारात्मक सोचे, समस्या को वास्तविक धरातल पर देखे और समझे।

मुझे बिल्कुल स्पष्ट रूप से स्मरण है कि जब मैंने कहा "यह कैसे हो सकता है कि मैं इस समस्या के बारे में न सोचूं ?" यीशु ने मुझसे क्या कहा था। उसने कहा, "यह बिल्कुल आसान है, जॉयस, किसी दूसरी बात को सोचो ?" देखिये, यदि आप किसी और बात पर विचार कर रहे है जो समस्या नहीं है, तो आप समस्या पर विचार नहीं कर रहे।

फिलिप्पियों 4:6 में लिखा है कि चिन्ता न करे परन्तु प्रार्थना करे। पद 7 में प्रतिज्ञा है यदि आप पद 6 करते है, आपको वह शांति मिलेगी, जो समझ से परे है। पद 8 में लिखा है –

"निदान हे भाईयों, जो जो बातें सत्य है, और जो जो बातें आदरणीय है, और जो जो बाते उचित है, और जो जो बाते पवित्र है और जो जो बातें सुहावनी है, और जो जो बातें मनभावनी है, निदान जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें है, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो..."

मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपको अनुग्रह प्रदान करे, जो पवित्रात्मा का सामर्थ है ताकि आप अपने जीवन में इन नियमों, सिद्धान्तों को अमल में लाये और धन्य, शांतिमय जीवन का आनन्द ले सके।

मेरी यह भी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपको अपनी महिमा और गौरव के लिये निःसंकोच उपयोग में लाये।

एक नये जीवन का अनुभव करे

यदि आपने कभी भी यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानकर स्वीकार नहीं किया है, मैं आपको आमंत्रित करती हूँ कि, अब आप ऐसा करे, आप यह प्रार्थना कर सकते है और यदि इस विषय में आप सचमुच गंभीर है, आप मसीह में एक नये जीवन का अनुभव पायेंगे।

हे पिता परमेश्वर, मैं आपके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करता/ती हूँ, जो संसार का उद्धारकर्त्ता है। वह मेरे लिये क्रूस पर मरा और उसने मेरे पापों को उठाया। उसने मेरे पापों का दाम चुकाया। उसने मेरे बदले में मेरा दण्ड सहा। मैं विश्वास करता/ती हूँ कि यीशु मृतकों में से जी उठा है और अब आपके दाहिने और बैठा है, हे यीशु मुझे आपकी आवश्यकता है। मेरे पापों को क्षमा करें, मेरा उद्धार करे। मुझमें वास करे। मैं नया जन्म पाना चाहता/ती हूँ।

अब विश्वास कीजिये कि यीशु आपके हृदय में निवास कर रहे है। आपके पाप क्षमा हो चुके है और आप धर्मी ठहराये जा चुके है जब यीशु आयेंगे, आप स्वर्ग जायेंगे।

अपने आसपास एक उत्तम कलीसिया की खोज करे जहाँ परमेश्वर का वचन सिखाया जाता है और मसीह में उन्नति करे। परमेश्वर के वचन के ज्ञान के बिना आपके जीवन में कुछ नहीं बदलेगा। यूहन्ना 8:31,32 में लिखा है, "यदि तुम मेरे वचनों में बने रहो... तुम मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

"लाईफ इन वर्ड" का समस्त स्टाफ आपसे प्रेम करता है। हम विश्वास करते है कि आपको शांति पर लिखी इस पुस्तक से आशीष प्राप्त होगी।

प्रियो,

यूहन्ना 8:31,32 में लिखा है, "यदि तुम मेरे वचनों में बने रहो... तुम मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानेगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि परमेश्वर के वचन को थामे रहे, इसे अपने हृदय में गहराई से बसने दें, 2 कुरि. 3:18 के अनुसार, जब आप परमेश्वर के वचन में देखेंगे, आप यीशु मसीह के तेजस्वी स्वरूप में अंश–अंश करके बदलते जायेंगे।

सप्रेम
जॉयस

लेखक के विषय में

जॉयस मेयर वर्ष 1976 से पवित्र शास्त्र के शिक्षण का कार्य कर रही है, वे 1980 से पूर्णकालीन सेवकाई में है। उन्होंने 54 से अधिक प्रेरणास्पद पुस्तकें लिखी है जिनमें "सीक्रेट्स टू एक्सेप्शनल लिविंग" "द जॉय ऑफ बिलीविंग प्रेयर' एवं "बैटल फील्ड ऑफ द माइंड" इत्यादि सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकें भी शामिल है, साथ ही 220 से अधिक ऑडियों कैसेट्स एलबम और 90 से अधिक वीडियो कैसेट जारी किये जा चुके है। उनके "लाइफ इन द वर्ड" नाम के रेडियों और टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रसारण समस्त विश्व में किया जाता है। वे अपनी लोकप्रिय "लाइफ इन वर्ड" सभाओं के लिये अपने संदेशो के साथ विश्व के अनेक देशों में प्रवास करती है। जॉयस एवं उनके पति डेव के चार बच्चे है और वे सब सेंट लुईस मिसौरी में निवास करते हैं।

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

Go to tv.joycemeyer.org
to watch Joyce's messages in a variety of languages

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Plot No. 512/B, Road No. 30,
Jubilee Hills, Hyderabad - 500 033
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org

अपनी समस्याएं परमेश्वर को सौंप दो...
और वह आपको शांति एवं आनन्द प्रदान करेगा!

क्या आप असंभव काम करने का प्रयास कर रहे है? क्या आप परिश्रम करके अपने आस–पास के लोगों को बदलना चाहते हैं? क्या आप खुश नहीं है क्योंकि आत्मिक रीति से आपको जहाँ होना चाहिए, आप वहाँ नहीं है? क्या आप शांति खो रहे हैं? यदि आपके पास शांति नहीं है, आप जीवन का आनन्द नहीं ले सकते। जॉयस मेयर आपको बताना चाहती है कि दिन प्रतिदिन के जीवन में कैसे नियंत्रण पाए... वे आपको सिखायेंगी कि

कैसे तूफानों के बीच शांति में बने रहें

- परमेश्वर की बाट जोहें और उसके नियुक्त समय की प्रतीक्षा करें।
- जो आपको विचलित करना चाहते हैं उन शांति चुराने वालों से बढ़कर चतुर बनें।
- परमेश्वर पर स्थिर एवं भरोसा रखने वाले दृष्टिकोण के द्वारा सामर्थ पाए
- आज के दिन के लिये मिले अनुग्रह पर ध्यान दें और कल की चिन्ता न करें।

परमेश्वर की शांति जो समझ से परे है, वह आपके लिये निःशुल्क भेंट है। क्या आप उसे ग्रहण करने के लिये तैयार हैं?

JOYCE MEYER MINISTRIES®

Plot No. 512/B, Road No. 30,
Jubilee Hills, Hyderabad - 500 033